कृषि नवाचार
हिन्दी पत्रिका
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 01 भाग 07 अक्टूबर, 2024

फूलगोभी के दैहिक विकार एवं नियंत्रण

रोहित कुमार[1] और अमित कुमार[2]

[1]एम०एस०सी० (कृषि), उद्यान विज्ञान विभाग, अमर सिंह कॉलेज, लखावटी, बुलन्दशहर, उ०प्र०

[2]सहायक प्राध्यापक, उद्यान विज्ञान विभाग, चौ. बेचेलाल महाविद्यालय, लखीमपुर-खीरी-262722

E-mail: rohitramesh30111991@gmail.com

फूलगोभी (ब्रेसिका ओलेरेसिया किस्म बोट्रीटिस) गोभी वर्गीय सब्जियों में अत्यन्त लोकप्रिय सब्जी है इसके तनें छोटे, पत्तियॉ चक्राकार तथा जड़ प्रणाली मूसला शाखित होती है। इसका मुख्य विकसित भाग फूल के रूप में विकसित होता है। फूलगोभी मे रोग और कीट के अलावा कुछ दैहिक विकार भी होते है जो इस प्रकार है।

व्हिपटेल (शीर्ष काझाड़ुनुमा हो जाना)

लक्षण: इसमे पत्तियॉ मुड़ी हुई और किनारे से सफेद होने लगती है जो बाद मे मुरझाकर गिर जाती है। बीच का फूल वाला भाग अनियमित रूप से बढ़ जाता है तथा फूलो (कर्ड) नही का विकास नही होता है।

कारण: यह विकार सूक्ष्म पोषक तत्व मोलिब्डेनम की कमी से होता है।

नियंत्रण: विशेष रूप से फूलगोभी को अम्लीय मृदा मे न लगाये। अमोनियम मोलिब्डेनम का 200-300 ग्राम / हेक्टेयर (0.01-0.1%) की दर से छिड़काव करे।

बटनिंग

लक्षण: ठंड के मौसम मे गोभी की फसल मे बटनिंग की समस्या आमतौर पर देखी जाती है। इस समस्या मे गोभी का फूल गुच्छे मे नहीं वल्कि अलग-2 पखुड़ियो में दिखाई देता है।

कारण: गोभी की फसल में नाइट्रोजन की कमी इसका प्रमुख कारण है। साथ ही बटनिंग की समस्या लम्बे समय तक ठंडी मौसम और पानी की कमी के कारण होती है। यदि रोपाई के लिए पुराने पौधों का उपयोग किया जाता है। तो यह समस्या बढ़ जाती है।

नियंत्रण: नाइट्रोजन की अनुशंसित मात्रा के अनुसार खेत मे यूरिया का उपयोग करे। यूरिया का 0.2% की दर से खड़ी फसल मे छिड़काव करे।

पुराने पौधे की रोपाई नही करे नये व स्वस्थ पौधों की रोपाई करे।

खेत मे उचित जल निकास की व्यवस्था करे।

फूलगोभी की अगेती किस्मों को उचित समय पर रोपाई करे।

ब्राउनिंग / लाल सड़न

लक्षण: इस विकार का पहला लक्षण कर्ड के बीच मे और तने मे भी पानी से शोषित क्षेत्रो का दिखना है। अधिक गंभीर अवस्था में गुलाबी पा जंग लगे भूरें या लाल सड़न मे खोखलापन हो जाता है। इस विकार के अन्य लक्षण पत्ते के रंग में परिवर्तन पतियों की मोटाई भंगुरता और पुरानी पत्तियो का नीचे की ओर मुड़ना और उसके बाद मध्य शिरा पर फफोलो का बनना है, पुराने पत्तो के किनारो पर बैगनी रंग दिखाई पड़ते है।

कारण: यह विकार बोरॉन की कमी से होता है। यह विकार क्षारीय मिट्टी में अधिक दिखाई देता है।

नियंत्रण: वोरिक एसिड 0.12% का पर्णीय छिड़काव करे या बोरेक्स का 0.25-0.50% का पर्णीय छिड़काव करे।

कृषि नवाचार
हिन्दी पत्रिका
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 01 भाग 07 अक्टूबर, 2024

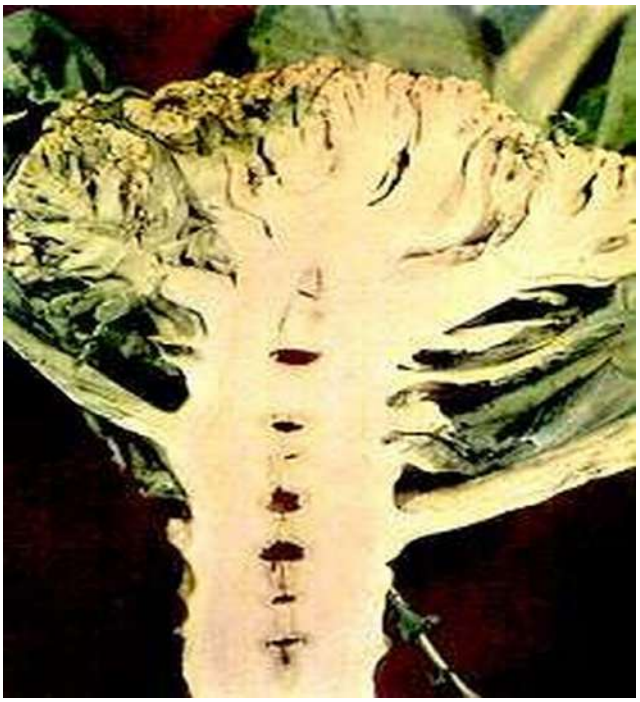

ब्लाइंडनेस (अंधापन)

लक्षण:: टर्मिनल कली के बिना पौधे को अंधापन कहा जाता है ऐसे पौधो की पत्तियॅा अतिरिक्त बड़ी मोटी, गहरे हरे रंग की हो जाती है और कार्बोहाइड्रेट के अत्यधिक संचय के कारण सख्त हो जाती है। ऐसे पौधे मे टर्मिनल या एपिकल कलियों को उत्पादित नही कर पाती हैं।

कारण: अंधेपन का मुख्य कारण बहुत कम तापमान या नर्सरी अवस्था में टर्मिनल कलियों को ठंड से छति होती है। फूलगोभी की पौध को नर्सरी से खेत मे रोपने के लिए या अंतरशस्य क्रियाओं के दौरान स्थानांतरित करने के दौरान कीटो के प्रकोप से टर्मिनल कली की क्षति हो जाती है।

नियंत्रण: पाले से कलियो को बचाने के लिए फसल में सिंचाई करे। कीटो से बचाव के लिए कीटनाशी का प्रयोग करें। फसल की देखभाल ठीक तरीके से करे ताकि शीर्ष को नुकसान न पहुँचे।

होलोनेस

लक्षण: इस विकार से ग्रसित पौधों मे तने के नीचे से लेकर ऊपर तक खोखला हो जाता है देखने मे यह पौधा वाकी की तुलना में अधिक बड़ा दिखाई देता है और इसका तना स्पष्ट सफेद रंग मे दिखाई देता है।

कारण: फूलगोभी मे तने का खोखलापन वोरान की कमी और नाइट्रोजन के अत्याधिक उपयोग के कारण होता है।

नियंत्रण: नाइट्रोजनीय उर्वरको का प्रयोग कम से कम करें। बोरेक्स का 0.1-0.3 प्रतिशत की दर से छिड़काव करे।

रिसीनेस

लक्षण: कुछ कई कभी-2 अलग-अलग पेडीकल्स के लम्बे होने के कारण ढीले पड़ जाते है विशेष रूप से गर्म बादलों वाली रातो मे अलग-2 फूलो के पेडीकल्स और समय से पहले फूल के खिलने के कारण कई सतह पर पीला और मखमली या दानेदार दिखाई देता हैं। फूल की कली के अचानक बढ़ने और समय से पहले उनके खिलने के कारण फूलगोभी मे रिसीनेस का कारण बनती है। कर्ड एक कटोरी उबले हुए चावल की तरह दिखती है इसलिए इसे रेसी कहते है रेसी के गुण को रिसीनेस कहते है।

कृषि नवाचार
हिन्दी पत्रिका
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 01 भाग 07 अक्टूबर, 2024

कारण: इस विकार के होने का कारण तापमान का ऊपर नीचे होना होता है।
दूसरा कारण ज्यादा आर्द्रता और ज्यादा नाइट्रोजन का प्रयोग भी है।
नियंत्रण: फूलगोभी की रिसिनेस से मुक्त किस्मे अंदेश, पूसा दिवाली, पूसा शुभ्रा आदि किस्मो की बुवाई करे।
नाइट्रोजन का अधिक प्रयोग न करें।

पत्तीदारपन

लक्षण: यह विकार आमतौर पर कर्ड से छोटी पतली पत्तियों के बनने से देखा जाता हैं, जो बाद में कर्ड की गुणवत्ता को खराब कर देता हैं। वंशानुगत या गैर वंशानुगत कारणों के कारण कई खण्ड के बीच बहुत छोटी-2 हरी पातियाँ दिखाई देती है।
कारण: कर्ड बनने के चरण मे उच्च तापमान पत्ती को बढ़ावा देता है।
नियंत्रण: कर्ड बनते समय निश्चित तापमान होना चाहिए। इसलिए कुछ किस्मे पत्ती दरपन के लिए अधिक संवेदनशील होती है, उनका चयन करे।

फजीनेस

लक्षण: फूलगोभी मे फजीनेस विकार रेसीनेस से थोड़ा मिलता हुआ है फजीनेस कली या फूल के पत्तेदार पुष्प खण्डो के लम्बे होने के कारण होता है। जिसमे कई की सतह मखमली वालो वाली वतन जैसी दिखाई देती है। यह अवसर कर्ड के किनारों के आसपास

विकसित होता है और फिर अन्य भागो पर दिखाई देता है। यह विसंगति वंशानुगत व गैर वंशानुगत दोनों है।

कारण: फजीनेस का मुख्य कारण फूल गोभी की असामान्य समय में खेती करना है।
नियंत्रण: फजीनेस को रोकने के लिए फूलगोभी की खेती सही समय पर करे।

क्लोरोसिस

लक्षण: फूलगोभी की किनारे की पतियाँ हल्के हरे पीले रंग की हो जाती है, जो बाद में पूरी पत्ती पीली पड़ जाती है, और कठोर हो जाती है, और अन्दर की ओर मुड़ जाती है। क्लोरोसिस पत्तियां की शिराओ के बीच से शुरू होकर बीच तक फैल जाता है, शिराएँ हरी रहती है। गंभीर कमी से नसों के बीच परिगलित धब्बे हो सकते है।

कारण: मैग्नीशियम तत्व की कमी इसका मुख्य कारण है।
नियंत्रण: फूलगोभी की फसल मे मैग्नीशियम तत्व का प्रयोग उचित समय पर करे।